ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, NO.1, Jan.- March,2024 /22

मेघदूत में प्रकृति–प्रेम

रंजना सिंह, शोधछात्रा –संस्कृत, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
डॉ0 राजेश उपाध्याय, बी0बी0डी0पी0जी0 कॉलेज, परुइय्या आश्रम, अम्बेडकर नगर
https://doi.org/10.61410/had.v19i1.168

भौतिक जगत के ईश्वर–प्रदत्त पदार्थ पर्वत वन, नदी सागर सरित् इत्यादि बाह्य प्रकृति कहलाते हैं तथा मानव अन्तःकरण अन्तःप्रकृति कहलाता है। महाकवि कालिदास बाह्य प्रकृति एवं अन्तः प्रकृति के चित्रण के अनुपम चितेरे हैं। उनके काव्यों में इन दोनों प्रकार की प्रकृति का चित्रण अपूर्व वैशिष्ट्य लिए हुये है।

'मेघदूत' तो महाकवि कालिदास को चमकती लेखनी का अमृत निष्पन्दन है। उनके काव्य में द्राक्षा को माधुरी, ज्योत्स्ना की स्निग्धता तथा कुन्द की मादक सुरभि की उमड़ती त्रिवेणी का पावन संगम है। 'मेघदूत' कालिदास की अनुपम प्रतिभा का परिपक्व निदर्शन है। या यूँ कहें कि मेघदूत की काव्यकला का मेरुदण्ड 'प्रकृति' है। मेघदूत का पूर्वमेघ तो बाह्य प्रकृति का अत्यन्त मनोरम रूप प्रस्तुत करता है। इसका आरम्भ रामगिरि आश्रम के उस प्रदेश से होता है, जहाँ के वृक्ष कोमल छाया वाले, तालाब का जल सीता जी के स्नान से पावन है।

यक्ष द्वारा मेघ के प्रति किया हुआ मार्ग वर्णन, जो रमणीय झाँकी प्रस्तुत करता है, उसे देखकर हृदय आनन्द विभोर हुए बिना नहीं रहता। अलका का मार्ग वर्णन करते हुए यक्ष मेघ से कहता है–

मध्ये श्यामः स्त इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।

अर्थात् हे मेघ! पके हुये पीले–पीले फूलों से लअे आम के पेड़ों से आम्रकूट पर्वत का प्रान्त भाग चारों ओर से घिरा होगा और पव्रत पृथिवी के पयोधरों की भाँति सुशोभित हो उठेगा।

जिस मेघ को आलम्बन बनाकर इसकी रचना की गई है, वह स्वयं प्रकृति का अद्भुत रूप है–

धूमज्योतिः सलिल मरुताम्।

मेघ धूम, अग्नि, जल और वायु का अपूर्व मिश्रण है। प्रकृति को वाणी की भाँति समझना यह कवि कालिदास के उत्कृष्ट प्रकृति प्रेम को दिखाता है।कामातुर व्यक्ति (यक्ष की भाँति) सजीव और निर्जीव के विषय में विवेकशून्य होते हैं–

कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

मेघ जब अलका के प्रति प्रस्थान करेगा तब वायु उसको धीमे–धीमे चला रही होगी, पपहीहा तुम्हारे बायें आकर मीठी रटन लगा रहा होगा, गर्भाधान का उत्सव मनाने की अभ्यासी बगुलियाँ आकश में पंक्ति बनाकर नयनों को सुभग लगने वाले तुम्हारे समीप अवश्य पहुँचेगी–

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वाँ वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।

गर्भाधानक्ष परिचयान्नूमाबद्धमालाः सेविष्यन्ते नयन सुभगं से भवन्तं बलाकाः।।

यक्ष, मेघ से कहता है कि जब तुम्हारे ऊपर इन्द्रधनुषी प्रकाश पड़ेगा तो तुम गोपवेशधारी भगवान् विष्णु की मनोहर शोभा को प्राप्त करोगे–

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ताद्
वाल्मीकिग्रात्प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापत्स्यते
बर्हेणेव स्फुरिटरुचिना गोपवेशस्य विष्णोः।।

इसी प्रकार (रेवा) नदी के रूप का वर्णन करते हुए कहा गया है–

रेवां द्रक्ष्यज्युपलविषमे, विन्ध्यपादे विशीर्णां

भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमग्े गजस्य।।

चट्टानों के कारण ऊबड़–खाबड़ विन्ध्य पर्वत की तलहटी में बिखरी हुई नर्मदा नदी ऐसी दिखेगी जैसे हाथी के अंगों पर चित्रित रेखाएँ हों।

यक्ष कहता है– हे मेघ! जिस प्रकार अतिथि का स्वागत होता है उसी प्रकार मयूर समूहों के द्वारा तुम्हारा भी स्वागत किया जायेगा–

शुक्लापाग्ैसजलनयनैः स्वगतीकृत्य केकाः।
प्रत्युद्यातः कथमपि भवान् न्तुमाशु व्यवस्येत।।

मेघ के गमन मार्ग को हिरण सूचित करेंगे, इस भाव को प्रदर्शित करते हुए वन की वनस्पतियों का चित्र महाकवि ने इस प्रकार खींचा है–

नोपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केशरैरद्धरूदै–
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्त्याः
सारगस्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति माग्रम्।

वर्षाकाल में मेघ के आने पर 'दर्शाण देश' कलियों के अग्रभागों में खिली केतकियों के कारण पीली कान्ति वाले उपवनों के घेरे वाला हो जायेगा। गाँव के मन्दिर कौआ इत्यादि के घोंसले बनाने के कर्म से युक्त होंगे–

पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नेः नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामः आकुलग्रामचैत्याः।

महाकवि कालिदास मेघ और विविन्ध्या नदी को अचेतन होते हुये भी नायक–नायिका के रूप में प्रस्तुत करते हुये सजीव बना दिया है–

वीचिक्षोभस्तनित विहगश्रेणीका४चोगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणय वचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।

यहाँ निर्विन्ध्या नदी नायिका की भाँति मेघ (नायक) से अपनी भँवर रूपी नाभि को दिखाकर प्रथम प्रणय याचना करती है।

इसमें वेदना की भावुकता का अनूठा प्रकृति चित्रण है। निर्विन्ध्या नदी की धारा वेणी की तरह पतली हो गई। उसके तट पर पेड़ों के पीले–पीले पत्ते झड़ कर उस पर आ गिरे हैं, जिससे उसकी कान्ति पीली पड़ गई है। इस प्रकार निर्विन्ध्या नदी पाण्डुरा कृशागी की तरह जान पड़ती है। यह मेघ प्रियतम का ही सौभाग्य है–

वेणी भूतप्रतनुसलिला तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिः शीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभगं विरहावस्थया व्यंजन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोषपाद्यः।।

कालिदास ने प्रकृति को उपादानों के रूप में स्वीकार कर काव्य को चिरनूतन सौन्दर्य प्रदान किया है। मानव जीवन की निरन्तर लालसाओं की अपेक्षा न कर कवि ने उसकी अनिवार्य अपेक्षा के आग्रहका आदर किया है। शिप्रावत के पवन में प्रार्थना–चाटुकार प्रियतम का रूप चमत्कार दृष्टिगत होता है–

शिप्रावात प्रियतम इव प्रार्थनाचटुकारः।।

कैलास के ऊपरी भाग में खिसके गगरूपी स्वच्छ वस्त्र वाली अलका को प्रेमी की गोद में अग्र से सरके हुये गगसदृश स्वच्छ वस्त्र वाली नायिका के समान बताया है–

तस्योत्सगे प्रणयिन इव स्रस्तगगदुकूलाम्।।

यक्ष अपनी प्रियतमा की शारीरिक सन्दरता को प्रकृति में देखता है–

स्यामास्वगं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातम्।।

प्रति सुन्दरी के सौन्दर्योपासक महाकवि कालिदास अमूर्त को मूर्त रूप देने में बड़े पटु हैं। उन्होंने नदियों को स्वाधीनपतिका और मेघ तथा पर्वतों को अनुकूल नायक के रूप में बड़े चमत्कारपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

अलका की सुन्दरियों के हाथों में लाल कमल है, खुली चोटी के अन्त मे कुछ कली गुथीं हुई हैं और मुख की शोभा लोघ्र पुष्प के पराग से पीली सी हो र्ग है–

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुबिद्धं

नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।।

इस प्रकार अलका में षड् ऋतुओं की निरन्तर अवस्थिति की विलक्षणा कल्पना को बड़ी निपुणता से साकारता दी है। निःसन्देह कालिदास प्रकृति के अन्तःस्थल के सूक्ष्म पारखी हैं जिनकी दृष्टि प्रकृति के सौम्य रूप माधुर्यतम् स्निग्ध सौन्दर्य की ओर रीझती है तथा उग्रता और भीषणता से सदैव पराङ्मुख रहती है। कालिदास का मेघदूत वास्तव में एक अमूल्य रत्न है। हजारों वर्ष बीत जाने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो आँखों के समक्ष पूरे मेघदूत का घटनाक्रम परिलक्षित होता है। ऐसे महान कवि कालिदास एवं उनकी अद्वितीय कृति मेघदूत को मेरा कोटि–कोटि नमन् है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/1
2. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/18
3. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/5
4. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/5
5. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/9
6. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/15
7. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/19
8. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/22
9. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/21
10. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/23
11. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/28
12. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/29
13. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/31
14. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/63
15. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 1/41
16. महाकवि कालिदास, मेघदूत, 2/1